



भारतीय राष्ट्रीय सहकारी संघ

(भारतीय सहकारी आंदोलन की शीर्षस्थ संस्था)

NATIONAL COOPERATIVE UNION OF INDIA

(APEX ORGANISATION OF THE INDIAN COOPERATIVE MOVEMENT)

दिलीप संघाणी

(पूर्व सांसद एवं पूर्व मंत्री गुजरात सरकार)

अध्यक्ष



Dileep Sanghani

(Ex. MP & Ex. Minister, Govt. of Gujarat)

President

दिनांक : 05.06.2024

विश्व पर्यावरण दिवस 2024

संदेश

विश्व पर्यावरण दिवस एक ऐसा दिन है जो प्राकृतिक दुनिया के साथ हमारे संबंधों और इसे संरक्षित करने और पुनर्स्थापित करने में हमारी जिम्मेदारियों को प्रतिबिंबित करने के लिए समर्पित है। आज, हमारा ध्यान एक महत्वपूर्ण विषय : "भारत में बायोमास खेती और हरित जैव-हाइड्रोजन उत्पादन के माध्यम से भूमि की पुनर्स्थापना : सामूहिक और लोक प्रशासन के बीच एक सेतु बनाना" पर है

सहकारी समितियों के रूप में, हमने हमेशा सामूहिक शक्ति के रूप में विश्वास किया है। हमारे साझा मूल्य और समुदाय द्वारा संचालित दृष्टिकोण हमें अपने समय की पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना करने के लिए आदर्श रूप से अनुकूल बनाते हैं। ऐसी ही एक चुनौती भूमि क्षरण (Land degradation) की है, जिससे हमारी कृषि उत्पादकता और जैव विविधता को खतरा है। भूमि क्षरण एक जटिल समस्या है जो वनों की कटाई, अत्यधिक चराई, अस्थिर कृषि प्रथाओं और जलवायु परिवर्तन सहित विभिन्न कारकों के परिणामस्वरूप होती है। इसके दूरगामी परिणाम हैं जो खाद्य सुरक्षा, पानी की गुणवत्ता और हमारे पर्यावरण के समग्र स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। इस चुनौती के जवाब में, हमने एक व्यवहारिक समाधान के रूप में बायोमास खेती पर अपना ध्यान केंद्रित किया है। बायोमास की खेती मिट्टी को स्थिर करके, उर्वरता बढ़ाकर, जल प्रतिधारण में सुधार और कार्बन को अनुक्रमित करके भूमि क्षरण को कम करने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करती है। बायोमास खेती न केवल बंजर भूमि को पुनर्स्थापित करती है, बल्कि अधिक लचीला और टिकाऊ पर्यावरण भी बनाती है।

ग्रीन बायो-हाइड्रोजन उत्पादन एक स्थायी ऊर्जा भविष्य की दिशा में एक और क्रांतिकारी कदम है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि पर्यावरण के अनुकूल प्रक्रियाओं के माध्यम से बायोमास से उत्पादित हाइड्रोजन, जीवाश्म ईंधन और कम ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन पर हमारी निर्भरता को काफी कम किया जा सकता है। जहां तक सहकारी समितियों का संबंध है तो इस संदर्भ में सहकारी समितियां स्थानीय समुदायों और लोक प्रशासन के बीच एक सेतु के रूप में कार्य कर सकती हैं तथा हरित प्रौद्योगिकियों को अपनाने की सुविधा प्रदान कर सकती हैं और यह सुनिश्चित कर सकती हैं कि इसका लाभ सबसे दूरस्थ क्षेत्रों तक भी पहुंचे।

हमारे देश का सहकारी आंदोलन पहले से ही स्थायी कृषि प्रथाओं और नवीकरणीय ऊर्जा पहलों में अग्रणी है। इस क्रम 'इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर कोआपरेटिव लिमिटेड' (इफको) द्वारा नैनो-यूरिया की शुरुआत एक मील का पत्थर है। नैनो-यूरिया एक अभूतपूर्व नई खोज है जो पारंपरिक उर्वरकों के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करते हुए फसल उत्पादकता बढ़ाने का वायदा करता है। नैनो-यूरिया किसानों के लिए स्मार्ट कृषि और जलवायु परिवर्तन से निपटने की दिशा में एक स्थायी विकल्प है। किसान नैनो-यूरिया का उपयोग करके कृषि क्षेत्रों से पोषक तत्वों की हानि को कम करके पर्यावरणीय प्रभाव को न्यूनतम कर सकते हैं तथा मिट्टी और जल प्रदूषण को सीमित करते हुए पैदावार को अधिकतम कर सकते हैं।

(.....2)



: 2 :

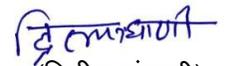
कृषि में प्रगति के अलावा, सहकारी समितियां नवीकरणीय ऊर्जा समाधानों (Renewable Energy Solutions) में भी अग्रणी भूमिका निभा रही। गुजरात में धुंडी सौर ऊर्जा सहकारी (Solar Energy Cooperative) इस बात का एक शानदार उदाहरण है कि सौर ऊर्जा ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं को कैसे बदल सकती है। सौर ऊर्जा के उपयोग के माध्यम से, यह सहकारी संस्था अतिरिक्त बिजली बेचकर किसानों के लिए अतिरिक्त राजस्व का सृजन करती है, साथ ही टिकाऊ ऊर्जा भी उपलब्ध कराती। विकेन्द्रीकृत, सामुदायिक स्वामित्व वाली सौर ऊर्जा के इस मॉडल को पूरे देश में अपनाया जा सकता है, जिससे किसान सशक्त बनेंगे और हमारा कार्बन उत्सर्जन कम किया जा सकेगा। इसी तरह, जलविद्युत सहकारी समितियां (Hydropower Cooperatives) (बहु-राज्य ऊर्जा उपभोक्ता सह उत्पादक सहकारी समिति) सतत विकास के लिए एक और आशाजनक अवसर हैं। ये सहकारी समितियां, स्थानीय जल संसाधनों का दोहन करके, जल संरक्षण और प्रबंधन को बढ़ावा देते हुए स्वच्छ बिजली उत्पन्न कर सकती हैं। सहकारी समितियों द्वारा प्रबंधित छोटे पैमाने की जलविद्युत परियोजनाएं, समावेशी विकास और विकास को बढ़ावा देते हुए, दूरस्थ और कम सेवा वाले क्षेत्रों को विश्वसनीय ऊर्जा प्रदान कर सकती हैं।

इन पहलों को बढ़ाने के लिए सहकारी समितियों और लोक प्रशासन के बीच तालमेल महत्वपूर्ण है। सहकारी समितियों के रूप में, हम समुदायों के भीतर काम करते हैं, जो समाज के ताने-बाने में गहराई से समाए हुए हैं। हमारा जमीनी स्तर का दृष्टिकोण हमें स्थानीय आवश्यकताओं और चुनौतियों को गहराई से समझने में सक्षम बनाता है, जिससे हम भूमि क्षरण जैसे पर्यावरणीय मुद्दों के लिए प्रभावी समाधान लागू करने में सक्षम होते हैं।

इसके अलावा, लोक प्रशासन और सहकारी समितियों के बीच सहयोग से हरित अर्थव्यवस्था की ओर बदलाव में तेजी आ सकती है। हम अपने संसाधनों और अनुभव को मिलाकर आर्थिक विकास और रोजगार सृजन के लिए नए अवसर पैदा कर सकते हैं, टिकाऊ प्रथाओं का समर्थन कर सकते हैं और रचनात्मक समाधान विकसित कर सकते हैं। केंद्रित निवेश और क्षमता बढ़ाने के प्रयासों के माध्यम से, हम आस-पास के समुदायों को हरित अर्थव्यवस्था में सक्रिय रूप से शामिल होने में सक्षम बना सकते हैं, जिससे सतत विकास के सहायक के रूप में उनकी क्षमता में वृद्धि की जा सकेगी।

आइए, इस विश्व पर्यावरण दिवस पर हम एक बार फिर सतत विकास और पर्यावरण की सुरक्षा का संकल्प लें। सहकारी समितियों के रूप में हमारे पास परिवर्तन को प्रेरित करने के लिए एक विशेष शक्ति है जो जीवन भर चलेगी, रचनात्मकता को बढ़ावा देगी और समुदायों को एकजुट करेगी। यदि हम मिलकर काम करें तो हम स्वच्छ ऊर्जा का उत्पादन कर सकते हैं, अपनी भूमि का पुनर्निर्माण कर सकते हैं, तथा सभी के लिए अधिक आशाजनक और टिकाऊ भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।

जय हिंद !


(दिलीप संघाणी)